Comparative Cost Theory of I. T.
or
Classical Theory of International Trade

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की समस्याओं को सुलझाने के लिए classical theory of International trade विकसित किया जिसे comparative cost or cost difference theory of International trade के नाम से जाना जाता है।

Classical economists के नेता Adam Smith ने सर्वप्रथम Absolute cost difference theory of International trade विकसित किया जिसके अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार वही है जो आन्तरिक व्यापार का है अर्थात श्रम विभाजन ही देशी तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार माना जाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में उन्हीं वस्तुओं को शामिल किया जाना चाहिए जिनकी उत्पादन लागत अन्य देशों में उस वस्तु की उत्पादन लागत की तुलना में कम हो। Adam Smith के Absolute cost का सिद्धान्त मुख्य रूप से किसी वस्तु विशेष के उत्पादन में किसी देश को अन्य देशों की तुलना में प्राप्त प्राकृतिक लाभ के तत्व पर आधारित था। Adam Smith का सिद्धान्त निम्न मान्यताओं पर आधारित था

1. उत्पादन का एकमात्र साधन श्रम है।
2. एक देश की सीमाओं के अन्दर श्रम पूर्णतया गतिशील होता है, परन्तु दो देशों के बीच श्रम की गतिशीलता सम्भव नहीं हो पाती।
3. एडम स्मिथ ने दो देश एवं दो वस्तुओं के सरलतम मॉडल को अपनाया।

Scanned with CamScanner

Adam Smith के निरपेक्ष लागत के सिद्धान्त को निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया जाता है-

वस्तु	पुर्तगाल		इंगलैण्ड	Absolute Cost advantage
शराब	80	<	120	पुर्तगाल को शराब उत्पादन में
कपड़ा	90	<	100	पुर्तगाल को कपड़ा उत्पादन में

ऊपर के तालिका से स्पष्ट है कि पुर्तगाल को कपड़ा तथा शराब दोनों वस्तुओं के उत्पादन में निरपेक्ष लागत अन्तर लाभ प्राप्त हो रहा है इसलिए दोनों वस्तुओं का उत्पादन एवं निर्यात पुर्तगाल द्वारा किया जायगा जबकि दोनों वस्तुओं का आयात इंगलैण्ड करेगा।

व्यवहारिक दृष्टि से यह सम्भव नहीं है कि इंगलैण्ड बिना कोई वस्तु को उत्पादित किए ही अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हिस्सा ले सके। इसी कारण David Ricardo ने ~~अवयुक्त~~ उपयुक्त आँकड़ों के आधार पर साबित किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए निरपेक्ष लागत अन्तर लाभ की आवश्यकता नहीं बल्कि लागत में तुलनात्मक अन्तर लाभ से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किसी देश के लिए सम्भव होगा। रिकार्डो के अनुसार-

"Under free trade each country specilises in the production and export of goods in whose production she possesses a comparative advantage in terms of real costs and imports goods in exchange in whose production she has comparative

Scanned with CamScanner

disadvantage in terms of real cost."

अर्थात "स्वतंत्र व्यापार के अन्तर्गत देश उस वस्तु में विशिष्टता प्राप्त करे तथा निर्यात के लिए उत्पादन करे जिसमें तुलनात्मक रूप में अधिकतम सापेक्षिक लागत अन्तर लाभ प्राप्त हो रहा है तथा यह देश उन वस्तुओं का आयात करे जिनके उत्पादन में सापेक्षिक लागत अन्तर लाभ का अभाव है।"

Ricardo के तुलनात्मक लागत अन्तर सिद्धान्त के आधार पर अधिक से अधिक देशों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लेने का अवसर मिलेगा। रिकार्डो का तुलनात्मक लागत अन्तर सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है-

1. यह सिद्धान्त दो वस्तुओं एवं दो देशों की मान्यता पर आधारित है।
2. श्रम को ही उत्पत्ति का साधन माना गया है।
3. दोनों देशों में वस्तु विनिमय होता है। विनिमय में मुद्रा का प्रयोग नहीं किया जाता।
4. दोनों देशों में उत्पत्ति के साधनों को पूर्ण रोजगार प्राप्त है।
5. दोनों देशों में स्थिर लागत अनुपात के अन्तर्गत उत्पादन होता है।
6. एक देश में उत्पत्ति के साधनों में पूर्ण गतिशीलता रहती है ~~किन्तु~~ किन्तु दो देशों के बीच इन साधनों में गतिशीलता का पूर्ण अभाव रहता है।
7. रिकार्डो का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त स्वतंत्र व्यापार की स्थिति को मान कर चलता है।
8. वस्तुओं के परिवहन की कोई लागत नहीं लगती।

रिकार्डो ने इस सिद्धान्त को आर दिये गए ~~आर~~ आंकड़ो के आधार पर विश्लेषण किया है-

Scanned with CamScanner

देश	कपड़ा [C]	शराब [W]	Domestic Exchange ratio	Comparative cost Ratio C : W
पुर्तगाल	90	80	$1W = \frac{80}{90} = 0.89C$ $1C = \frac{90}{80} = 1.125W$	$\frac{90}{100} > \frac{80}{120}$ ⇒ पुर्तगाल शराब निर्यात करेगा
इंगलैण्ड	100	120	$1W = \frac{120}{100} = 1.2C$ $1C = \frac{100}{120} = 0.83W$	$\frac{100}{90} < \frac{120}{80}$ ⇒ इंगलैण्ड कपड़ा निर्यात करेगा

ऊपर के तालिका से रिकार्डो स्पष्ट करना चाहते है कि जिस आँकड़ों के आधार पर निरपेक्ष लागत अन्तर सिद्धान्त के कारण इंगलैण्ड कुछ भी निर्यात करने लायक नहीं था। उसी आँकड़ा का उपयोग कर हम सापेक्षिक लागत अन्तर लाभ सिद्धान्त का आधार बनाए तो इंगलैण्ड कपड़ों का उत्पादन तथा निर्यात करेगा जबकि पुर्तगाल शराब का उत्पादन करेगा तथा निर्यात करेगा। इसतरह से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्भव होगा। इंगलैण्ड शराब का आयात तथा कपड़ा का निर्यात करेगा तथा पुर्तगाल कपड़ा का आयात तथा शराब का निर्यात करेगा। इससे दोनों देशों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से लाभ की प्राप्ती होगी, इसे निम्नांकित चित्रों से प्रदर्शित किया जा सकता है

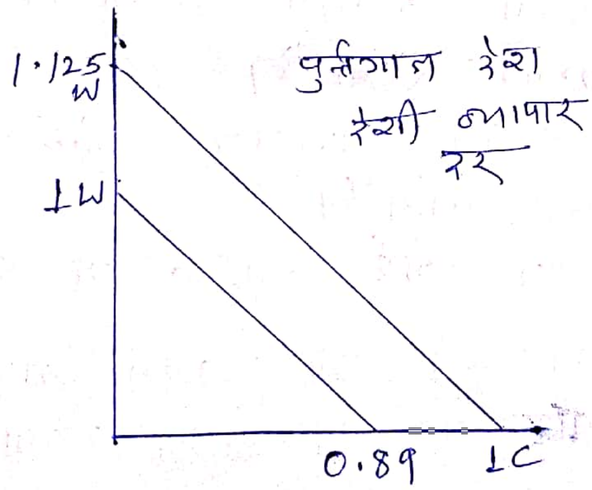

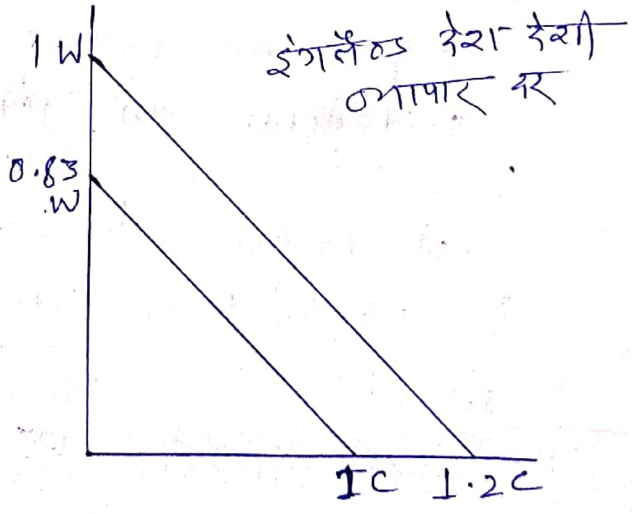

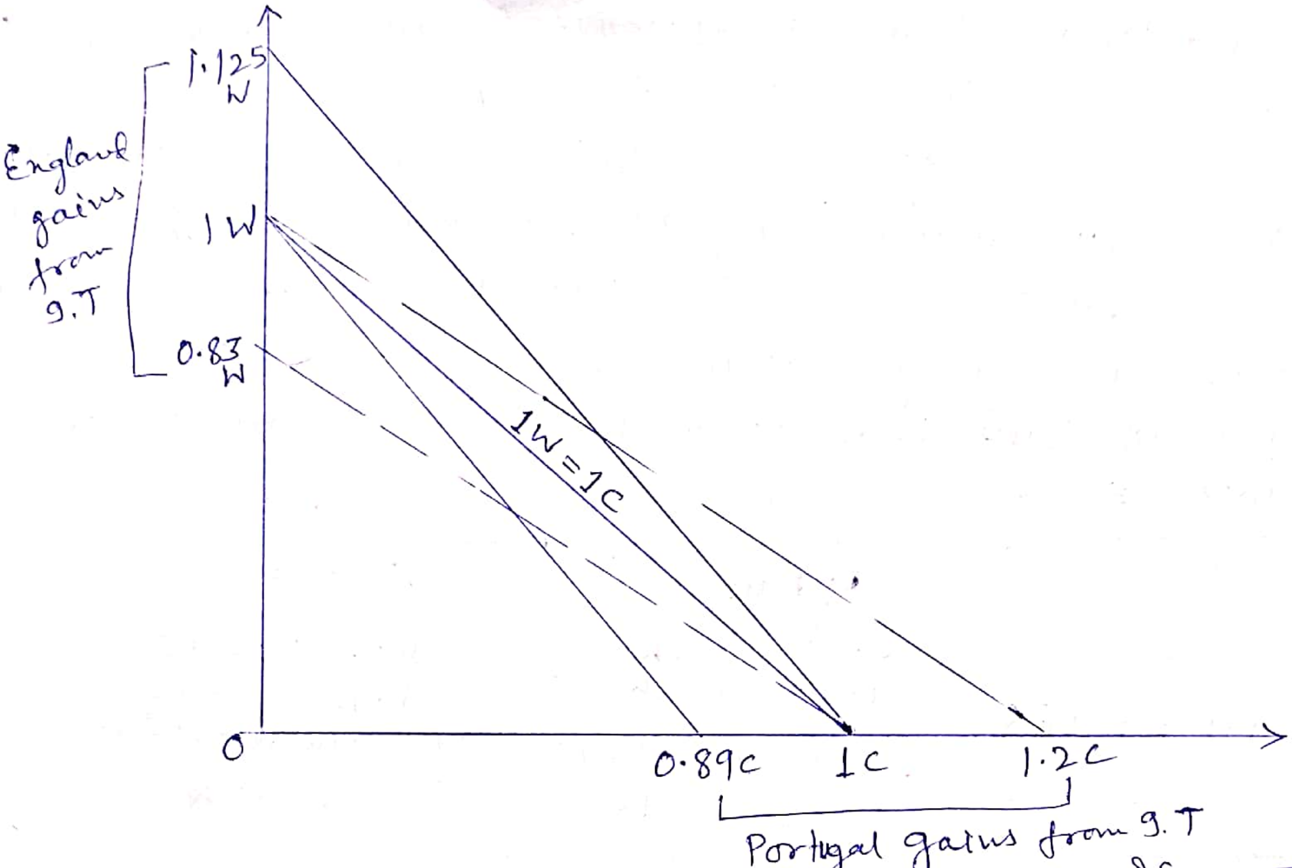

ऊपर दिये गए तालिका एवं चित्रों से रिकार्डो द्वारा दिये गए उदाहरण को प्रदर्शित किया गया है। इससे स्पष्ट है कि पुर्तगाल में दोनों वस्तुओं के उत्पादन लागत इंगलैण्ड की तुलना में कम है। एडम स्मिथ के Absolute cost difference के आधार पर केवल पुर्तगाल को ही दोनों वस्तुओं का उत्पादन करना चाहिए तथा इंगलैण्ड को दोनों वस्तुओं में किसी का भी उत्पादन नहीं करना चाहिए। किन्तु व्यवहार में यह सम्भव नहीं है। रिकार्डो का मत है कि उपर्युक्त उदाहरण में यद्यपि पुर्तगाल को इंगलैण्ड की तुलना में दोनों वस्तुओं के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्राप्त है। किन्तु पुर्तगाल में कपड़ा की तुलना में शराब के उत्पादन में अधिकतम लागत लाभ प्राप्त होता है। ठीक इसके विपरीत इंगलैण्ड को दोनों वस्तुओं के उत्पादन में तुलनात्मक लागत हानि प्राप्त हो रहा है किन्तु इंगलैण्ड को शराब की तुलना में कपड़ा उत्पादन में कम लागत हानि प्राप्त होता है। इसलिए इंगलैण्ड वस्त्र उत्पादन कर उसे निर्यात कर शराब का आयात कर सकता है। दूसरी ओर पुर्तगाल को शराब उत्पादन

Scanned with CamScanner

में विशिष्टता प्राप्त करनी चाहिए ताकि शराब को निर्यात कर कपड़ा को आयात करें।

ऊपर के आंकड़ों के आधार पर पुर्तगाल को शराब निर्यात तथा कपड़ा आयात से शुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार लाभ की प्राप्ती होगी जब कि इंगलैण्ड को कपड़ा निर्यात तथा शराब आयात से शुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार लाभ की प्राप्ति होगी जैसा कि नीचे के तालिका से स्पष्ट है :—

	पुर्तगाल	इंगलैण्ड
DER = IER	0.89C = 1W 1.2C = 1W ∴ GGT = 1.2C − 0.89C = 0.31C	0.83W = 1C 1.125W = 1C GGT = 1.125W − 0.83W = 0.295W
IER ⇒ 1W = 1C	GGT = 1.2C − 1C = 0.20C	GGT = 1.125W − 1W = 0.125W

ऊपर के तालिका से स्पष्ट है कि अगर पुर्तगाल तथा इंगलैण्ड में देशी व्यापार विनिमय दर पर ही विदेशी व्यापार की शर्तें तय हो जाए तो पुर्तगाल को 0.31 कपड़ा शुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार लाभ मिलेगा जबकि इंगलैण्ड को 0.295 शराब शुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार लाभ की प्राप्ती होगी। इसप्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का तुलनात्मक लागत अन्तर सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सही कारणों को बताता है। एक देश को अपने साधनों का व्यवहार सबसे अधिक लाभदायक विकल्प में करना चाहिए।

Criticisms

रिकार्डो का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त को निम्नलिखित आधार पर आलोचित किया जाता है :-

1. मूल्य के श्रम सिद्धान्त की मान्यता दोषपूर्ण - रिकार्डो ने अपने सिद्धान्त में श्रम को ही लागत का प्रमुख आधार माना है किन्तु कुल लागत में श्रम के अतिरिक्त अन्य साधनों को भी शामिल किया जाता है। अतः विनिमय दर मौद्रिक लागत के आधार पर ही ज्ञात की जा सकती है।

2. उत्पत्ति स्थिर नियम की मान्यता अव्यवहारिक - रिकार्डो का मानना है कि उत्पादन स्थिर नियम के अन्तर्गत होता है किन्तु यह दृष्टिकोण उचित नहीं है क्योंकि उत्पत्ति में सदैव स्थिर नियम लागू नहीं होता। यदि उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होने लगता है तो तुलनात्मक लाभ का आधार समाप्त हो जाता है।

3. परिवहन लागत की अवहेलना - तुलनात्मक लागत सिद्धान्त में यह मान लिया गया है कि परिवहन व्यय नहीं लगता किन्तु यह मत भी सही नहीं है। वास्तव में एक देश से दूसरे देश को माल भेजने में परिवहन व्यय लगता है।

4. दो से अधिक देशों पर लागू नहीं - यह सिद्धान्त उसी समय लागू होता है जब उसे केवल दो वस्तु तथा दो देशों पर लागू किया जाए। किन्तु यथार्थ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दो से अधिक देशों में किया जाता है।

5. साधनों की गतिशीलता की मान्यता अव्यवहारिक - यह सिद्धान्त एक देश के भीतर उत्पत्ति के साधनों को पूर्णरूप से गतिशील मानता है किन्तु दो देशों के बीच इनकी गतिशीलता को स्वीकार नहीं करता, जो कि अव्यवहारिक है।

6. मांग की दशाओं की अवहेलना - यह सिद्धान्त ~~एक देश के भीतर उत्पत्ति के साधनों को पूर्णरूप~~ एकपक्षीय है क्योंकि यह केवल पूर्ति पक्ष पर ही विचार करता है जिससे केवल यह तय होता है कि देश किन किन वस्तुओं का निर्यात एवं आयात करेगा। बाद में J.S. Mill ने यह स्पष्ट किया कि वस्तुओं के विनिमय अनुपात को निर्धारित करने में मांग की लोच का महत्वपूर्ण हाथ होता है।

Scanned with CamScanner

7. पूर्ण रोजगार की मान्यता दोषपूर्ण – सिद्धान्त की पूर्ण रोजगार की मान्यता अव्यवहारिक है। वास्तविकता यह है कि सदैव पूर्ण रोजगार से कम की स्थिति विद्यमान रहती है।

Conclusion

यद्यपि तुलनात्मक लागत सिद्धान्त की कटु आलोचना की गई, किन्तु यह सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रकृति को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी कारण प्रो० ओहलिन ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के जिस आधुनिक सिद्धान्त को स्थापित किया उसमें तुलनात्मक लागत सिद्धान्त को विरोधी न मानकर उसका पूरक माना है तथा इसे दोषमुक्त करने का प्रयास किया है।

——x——

By -
Dr Sandhya Rani
Maharaja college

Scanned with CamScanner